ईश्वरीय कारोबार में आदर्श व्यवस्था संपन्न करने की ज़रूरत – 9

✻ ब्रह्माकुमार रमेश, मुंबई (गामदेवी)

पिछले लेख में हमने श्रेष्ठ ईश्वरीय कारोबार के लिए आवश्यक गुण 'समर्पणता' के बारे में विचार किया। मैनेजमेन्ट सिखाने वाले गुरुओं का दूसरा विषय है - Devotion जिसे हिंदी में श्रद्धा, लगन, भक्ति या निष्ठा कहते हैं अर्थात् जो भी कार्य हम करें उस कार्य के प्रति पूर्णरूपेण श्रद्धा-विश्वास हो। जो कार्य करें वह पूरी लगन तथा दिल से करें। जब तक हमारे मन में किसी भी कार्य के प्रति संशय होता है या उसमें हमारा पूर्ण विश्वास नहीं होता है तो वह कार्य श्रेष्ठ रीति संपन्न नहीं होता है।

शास्त्रों में भी ऐसी ही बातें लिखी गई हैं। श्रीमद् भगवद्गीता में अर्जुन की मनोदशा चित्रित की गई है कि जब महाभारत का युद्ध शुरू हो रहा था तब अर्जुन के मन में यही दुविधा थी कि युद्ध करे या न करे क्योंकि उसके सामने युद्ध के मैदान में उसके परिजन व वरिष्ठजन थे इसलिए वह बहुत हताश व निराश था। वह युद्ध करना नहीं चाहता था इसलिए उसने शस्त्र त्याग दिये तो श्रीकृष्ण ने उसे पहले ही श्लोक में कहा कि मेरे में सम्पूर्ण निश्चय रखकर कर्मफल की इच्छा न रखते हुए तुम युद्ध करो तो तुम्हें सफलता मिलेगी। इस प्रकार ज्ञान मिलने के बाद अर्जुन ने कहा कि अब मैं सम्पूर्ण नष्टोमोहा व निश्चयबुद्धि बन गया हूँ इसलिए युद्ध करूंगा। इस प्रकार अर्जुन ने श्रीकृष्ण के वचनों पर पूर्ण श्रद्धा रखकर युद्ध किया और सफल हो गया।

इसी प्रकार अंग्रेजी साहित्य में हैमलेट का एक पात्र है। उसके सामने भी यही प्रश्न था कि यह करूँ या ना करूँ? इसमें वह मूँझ गया क्योंकि उसके पास श्रीकृष्ण जैसा कोई मार्गदर्शक नहीं था जो उसका मार्गदर्शन करता इसलिए वह असफल हो गया। अगर हम अपने जीवन में हर कार्य श्रद्धा, लगन एवं दृढ़ निश्चय से करते हैं तो सफलता अवश्य ही मिलती है।

बचपन में मैंने एक कहानी पढ़ी थी कि एक बार एक गाँव में अकाल पड़ा, गाँव के लोगों ने तय किया कि वे यज्ञ करेंगे। जब यज्ञ शुरू हुआ तब एक आदमी वहाँ छाता लेकर आया। उसे देखकर सब लोग हँसने लगे कि अभी तो बारिश के लिए यज्ञ ही कर रहे हैं और यह तो छाता भी ले आया। उस आदमी से जब पूछा गया तो उसने उत्तर दिया कि जब आप बारिश के लिए यज्ञ कर रहे हो तो बारिश तो आयेगी पर जब वापिस जायेंगे तो उसी समय छाता कहाँ से लायेंगे? फिर उसने कहा कि आप लोगों को अपने ही कार्य में जब पूर्ण श्रद्धा नहीं है तो सफलता कैसे मिलेगी? जब आप एक ही लक्ष्य प्रति सम्पूर्ण श्रद्धा से कार्य करेंगे तब ही सफलता मिलेगी।

शास्त्रों में मिसाल है कि एक राजा के पास एक पंडित था उसका नाम कुमारिल भट्ट था। राजा को संशय था कि वेद अपौरुषेय नहीं हैं परंतु पंडित कुमारिल भट्ट का कहना था कि वेद अपौरुषेय हैं। राजा ने उसे कहा कि अगर सचमुच वेद अपौरुषेय हैं तो आप चार मंजिल इमारत से छलांग लगाओ। इतनी ऊँचाई से गिरने के बाद भी तुम्हें कुछ नहीं होता हैं तो मैं मानूँगा कि वेद अपौरुषेय हैं। कुमारिल भट्ट ने छलांग लगाई और उसके दोनों पैर टूट गये तो उसे भी वेदों के अपौरुषेय होने के बारे में संशय हुआ और उसने भगवान से प्रार्थना की कि हे भगवान, मेरे साथ ऐसा क्यों हुआ? उसी समय एक आकाशवाणी हुई कि वेद अपौरुषेय हैं, इसमें तुम्हारी पूर्ण श्रद्धा नहीं थी इसलिए तुमने भगवान से कहा कि हे भगवान, अगर वेद अपौरुषेय हैं तो मुझे कुछ भी नहीं होना चाहिए। तुम्हारे

इस 'अगर' शब्द ने तुम्हारे मन के संशय को व्यक्त कर दिया और परिणामस्वरूप तुम्हारे दोनों पैर टूट गये। इस बात से हमें सबक मिलता है कि कोई भी कार्य करना है तो उसमें सम्पूर्ण निश्चय एवं श्रद्धा रखनी चाहिए।

प्यारे बाबा के यज्ञ में हर ईश्वरीय कार्य में सदा ही सफलता मिलती है। फिर भी हमें तब तक पूर्ण निश्चय नहीं होता जब तक वह कार्य सम्पन्न नहीं हो जाता। यज्ञ के प्रारंभ के दिनों में शिवबाबा और ब्रह्मा बाबा अलग-अलग हैं, यह सिद्ध करने के लिए शिवबाबा ने जो अलग रथ चुना उनका नाम था दादी पुष्पमणि। उनके तन में शिवबाबा लगातार 15 दिन आते रहे। एक बार दादी पुष्पमणि जी खटिया पर सोई हुई थी और बाहर कमरे में मातेश्वरी जी और दीदी मनमोहिनी जी चर्चा कर रहे थे और सोच रहे थे कि यह पुष्पमणि के तन में आया हुआ कौन है? ऐसा सोचते ही दादी पुष्पमणि के तन में शिवबाबा ने प्रवेशता की और कमरे से बाहर आकर कहा कि जब आपका ही मेरे में निश्चय नहीं है तो आप दूसरों को मेरे बारे में क्या समझायेंगे? आपके मन में जो यह संशय है कि शिवबाबा और ब्रह्मा बाबा एक हैं या अलग हैं, उसे दूर करने के लिए मैंने इस तन का आधार लिया। मैं आपको भविष्य की योजनाओं के बारे में बताना चाहता हूँ परंतु जब तक आपका मेरे में निश्चय नहीं होगा तब तक मैं आपको कैसे बताऊँ? मातेश्वरी जी और दीदी ने तुरन्त शिवबाबा से माफी मांगी और उसके बाद से उन्होंने शिवबाबा पर पूर्ण निश्चयबुद्धि होकर हर कार्य किया। उन दोनों का शिवबाबा में अटल निश्चय देखकर बाकी सभी ब्रह्मावत्स भी निश्चयबुद्धि बन गये और उसी अनुसार सभी ने यज्ञ सेवा की। भावार्थ यह है कि जब तक हम बाबा में सम्पूर्ण निश्चय या श्रद्धा नहीं रखते तब तक हमें सम्पूर्ण सफलता प्राप्त नहीं होती।

एक बार मैं आबू में था तब मातेश्वरी जी दिल्ली आदि स्थानों पर सेवा करके वापस आबू आये थे। उन्होंने उस समय हापुड़ में चल रही समस्याओं के बारे में बताया। एन्टी पार्टी ने हापुड़ में बहुत-सी समस्यायें खड़ी कर दी थीं जैसे कि पानी बंद कर दिया था, आवश्यक सामान खरीदने नहीं देते थे आदि-आदि तथा बलदेव भाई पर उन लोगों ने साँप डाल दिया था। यह सब सुन मेरे मन में प्रश्न उठा कि ऐसे स्थान पर कैसे सेवा करें? तो मैंने प्यारे ब्रह्मा बाबा से पूछा कि बाबा ये सब समस्यायें सुनते हुए आपको संशय नहीं आता कि स्थापना का कार्य कैसे होगा? ब्रह्मा बाबा ने बहुत सुन्दर उत्तर दिया कि बच्चे, मुझे ड्रामा में पूर्ण निश्चय है कि 5000 वर्ष पहले जैसे यज्ञ की स्थापना हुई थी ठीक वैसे ही अभी भी हो रही है इसलिए मुझे कोई संशय नहीं आता है। मुझे यह पूर्ण निश्चय है कि हर कार्य में सफलता हुई पड़ी है। यह उत्तर सुनकर उस समय से मैंने भी ड्रामा में पूर्ण श्रद्धा रखी।

सन् 1971 में हम छह डेलीगेट्स (दादी शीलइन्द्रा, जगदीश भाई, डॉ. निर्मला, रोजी बहन, ऊषा जी तथा मैं) विदेश सेवा पर जाने अर्थ विदाई लेने मधुबन आये थे। विदाई के समय अव्यक्त बापदादा ने यही कहा कि बच्चे, मैंने आप लोगों के लिए वहाँ सब तैयारी कर रखी है, आप को तो वहाँ केवल स्वीच ऑन करने जितनी मेहनत करनी है। भारत सरकार ने उस समय हममें से हरेक को केवल 6 डॉलर ले जाने की परमिशन दी थी और हम बाबा की श्रीमत पर पूर्ण श्रद्धा रख उस 6 डॉलर से पूरे विश्व की सेवा करने निकले थे। जब मुम्बई से हवाई जहाज से निकले तो एयर होस्टेस ने सभी को हैडफोन दिया। जगदीश भाई जी ने सोचा कि कुछ गीत आदि सुनेंगे परंतु उसके लिए एयर होस्टेस ने 3 डॉलर मांगे। जगदीश भाई ने मुझसे पूछा कि गीत सुनें? मैंने कहा कि हमारे पास सिर्फ 6-6 डॉलर हैं और उनमें से 3 डॉलर अगर गीत सुनने के लिए खर्च करेंगे तो बचे हुए 3 डॉलर में हम कैसे काम करेंगे।

ब्रुसेल्स में जब हम पहुँचे तब वहाँ

पर दो वर्ष पूर्व इन्टरनेशनल योगा की जो कॉन्फ्रेन्स हुई थी उन लोगों से हमने सम्पर्क किया और वहाँ से हम लंदन गये। लंदन में इतनी सेवा थी जो चार डेलीगेट्स लंदन में रहे तथा मैं और निर्मला बहन न्यूयॉर्क गये। न्यूयॉर्क में हम मेरे एक मित्र के घर गये। उस समय Awosting Retreat की कॉन्फ्रेन्स में हमें भाग लेना था। कॉन्फ्रेन्स का स्थान उनके घर से 180 मील दूर था। उस दिन रविवार था इसलिए मेरे मित्र ने हमें ऑस्टिंग रिट्रीट के कॉन्फ्रेन्स के स्थान पर छोड़ दिया। हमें बाबा पर पूर्ण विश्वास था कि हमें वापिस आने का प्रबंध मिल जायेगा। वहाँ एक भाई हमें मिला, उसने हमें कहा कि मैं आपकी मुम्बई की प्रदर्शनी में आया था और आपने मुझे इस कॉन्फ्रेन्स का निमंत्रण दिया था। फिर वह भाई चार दिन हमारे साथ ही रहा और उसने हमें वापिस भी छोड़ दिया। उस भाई ने ही बाद में हॉल आदि ढूँढ़ने में हमारी मदद की। प्रदर्शनी के लिए हॉल देखने जब गये तो हॉल की मालिक बहन को हमने कहा कि हमें प्रदर्शनी करनी है तो उस बहन ने कहा कि इस हॉल का एक दिन का किराया 300 डॉलर है फिर उस बहन ने हमसे पूछा कि आपको कितने दिन यह प्रदर्शनी करनी है, तो मैंने भी निश्चय से कहा कि 11 दिन करनी है और उस समय हमारे पास 10 डॉलर ही थे। फिर उस बहन ने हमसे पूछा कि आप प्रदर्शनी देखने वालों से हरेक से कितनी फीस चार्ज करेंगे? हमने कहा कि हम तो ईश्वरीय सेवा कर रहे हैं इसलिए हम किसी से कुछ भी चार्ज नहीं करेंगे। हमें हमारे शिवबाबा ने किसी से कुछ भी मांगना नहीं सिखाया। बाबा ने कहा है कि बच्चे, आप दाता के बच्चे देवता हो इसलिए आप किसी से मांग नहीं सकते। यह सुनकर उस बहन ने कहा कि जब आप फ्री सेवा करेंगे तो मैं आपसे कैसे किराया ले सकती हूँ। आपसे किराया लूँगी तो मेरे देश की इज्जत जायेगी और मैं अपने देश की इज्जत नहीं गँवाना चाहती हूँ। उस बहन ने हमें उस हॉल की चाबी दी और कहा कि आपको जितने दिन प्रदर्शनी करनी है, आप कर सकते हैं। इसके बाद प्रदर्शनी के लिए हमें टेबल की जरूरत थी तो हमने फर्नीचर वालों के साथ बात की तो उन्होंने कहा कि 1 टेबल का एक दिन का किराया 1 डॉलर है। हम बाबा के महावाक्यों पर निश्चय रखकर उस भाई के मालिक के पास गये और उन्हें प्रदर्शनी का उद्देश्य बताया तो उस भाई ने भी हमें 11 दिनों के लिए फर्नीचर फ्री में दिया, साथ में टेबलक्लॉथ भी दिया। उसके बाद हमें कार्ड छपवाने थे तो हम प्रिंटिंग प्रेस में गये। उसने 500 कार्ड के 9 डॉलर लिये, उसे भी हमने फ्री कराने का प्रयत्न किया परंतु वह नहीं हो सका। दूसरे दिन अमृतवेले मैंने बाबा को कहा, बाबा, सब काम आपने फ्री करा दिये फिर इसमें पैसे क्यों लगे? सूई की नोंक से सारा ऊँट निकल गया परंतु पूँछ उसमें अटक गई। ऐसे तो बाकी सब मुफ्त में मिल गया लेकिन कार्ड छपवाने के 9 डॉलर क्यों लगे? बाबा बहुत ही सुन्दर मुसकराये और कहा कि यह सब कार्य ईश्वरीय शक्ति के आधार से हो रहे हैं यह समझाने के लिए ये 9 डॉलर का खर्चा हुआ। अगर मेरा सहयोग नहीं होता तो यहाँ आपको कितना खर्चा करना पड़ता था इसका अनुभव कराने के लिए मैंने ऐसा किया।

उसके बाद हमारे 4 अन्य डेलीगेट्स भी न्यूयार्क आये, प्रदर्शनी सफल हुई। इस प्रकार सफलता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार हैं परन्तु आवश्यकता है कि हमारा परमात्मा में दृढ़ निश्चय, दृढ़ विश्वास हो। ईश्वरीय सेवा में सदा यह निश्चय रखें कि यह कार्य परमात्मा का है, हम निमित्त बनकर कार्य कर रहे हैं।

बाबा के बताये इस सिद्धांत का प्रयोग लौकिक दुनिया के कारोबार में भी करेंगे तो वहाँ भी सफलता मिलेगी। बाबा के बच्चों के दृढ़ निश्चय के हजारों मिसाल हैं जिनमें सफलता मिली है। ऐसे अनुभवों की पूरी किताब बन सकती है। जिन भी भाई-बहनों ने बाबा में सम्पूर्ण निश्चय रखकर ऐसी सफलता प्राप्त की है उन्हें मेरा शत शत प्रणाम! ❖